International Journal of Humanities, Social Sciences and Literary Research
Website: www.ijhslr.org/
E-mail: editorinchief@ijhslr.org

आधुनिकता के सन्दर्भ में पूर्वी उत्तर-प्रदेश का भौगोलिक, सामाजिक0 एवं सांस्कृतिक परिवेश

डॉ० प्रेमचन्द

हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बदायूँ

**Corresponding author email: premchandbastiya1982@gmail.com*

Received:13 July 2025, Revised: 19 October 2025, Accepted: 23 December 2025, Available Online: 25 December, 2025

① प्रस्तावना :-

किसी भी क्षेत्र का सामाजिक, सांस्कृतिक या भौगोलिक स्थिति के अध्ययन के लिए जरूरी है कि सर्वप्रथम उसकी भौगोलिक स्थिति को सुनिश्चित किया जाए । पूर्वी उत्तर-प्रदेश भारतीय उपमहाद्वीप के साँस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक रूप से समृद्ध क्षेत्रों में से एक प्रमुख है। उत्तर-प्रदेश ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन व्यवस्था में मध्य प्रांत के नाम से अग्रगण्य था। यह भौगोलिक विविधताओं से सम्पन्न था, किन्तु अंग्रेजों ने यहाँ की कृषि व्यवस्था, एक समान जमींदारी व्यवस्था को लागू किया। पूर्वी उत्तर-प्रदेश भाषा की विभिन्नग और विभाजन के बावजूद भी अपनी भौगोलिक स्थिति में एक हद तक एकरुपता बनाए हुए है।

आजादी के पश्चात् जमींदारी उन्मूलन के बाद सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर भी बड़े परिवर्तन हुए किन्तु इसके केन्द्र में संसदीय राजनीतिक नेतृत्व था जिसने इस प्रदेश के एक भाग की एक रूपता को बनाए रखा। यह एकरूपता सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक समस्या व इससे मुक्त होने के प्रयासों में लगातार बनी रही। यह क्षेत्र गंगा यमुना के उपजाऊ क्षेत्र पर विस्तृत है और इसका सामाजिक सास्कृतिक ताना-बाना आदिकाल से धार्मिक, भाषायी एवं जातिगत विविधता के मध्य विकसित होता चला आया है। आधुनिक काल में जब भारत सामाजिक, सांस्कृतिक राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर आधुनिकता की और प्रगति पर है, पूर्वी उत्तर-प्रदेश के परिवेश का विश्लेषण अनुसंधान के निमित्त बेहद प्रासंगिक है।

② भौगोलिक परिवेश और आधुनिकता:-

(क) भू-क्षेत्र:- "पूर्वी उत्तर प्रदेश, चतुर्भुजाकार रुप $23° - 51^1$ उत्तर से $84° - 39^1$ पूर्व देशान्तरों के मध्य अवस्थित है। यह 852979 वर्ग कि० मी० क्षेत्र पर विस्तृत है जो उत्तर-प्रदेश का 19.10% है। उत्तर-दक्षिण लम्बाई लगभग 550 किमी० तथा पूर्व-पश्चिम लम्बाई लगभग 375 किमी० है।"①

पूर्वी उत्तर-प्रदेश अपने सीमा विस्तार में पूर्व में विहार पूर्व-उत्तर में नेपाल, व दक्षिण में मध्य-प्रदेश की सीमाओं से जुड़ता है |

(ख) भू-संरचना :- पूर्वी उत्तर प्रदेश की भू संस्चना एक समान नहीं -है। इसके नाते कृषि उत्पादन और खनिज संसाधनो में एकरुपता नहीं है। उसका बड़ा भू भाग नदियों के अपवाह से बना मैदानी क्षेत्र है।

(i) गंगा- घाघरा का दोआब :- "पूर्वी उत्तर-प्रदेश की दो बड़ी नदियां एक विस्तृत मैदानी क्षेत्र का निर्माण किया "कौशाम्बी से लेकर फैजाबाद, आजमगढ़, गाजीपुर, बलिया तक पूरा क्षेत्र इन नदियों से बनायी गयी मिट्टी पर विकसित है। चिकनी और बलुई मिटटी है जिसमें थोड़ा अम्ल भी हैं।" ②

(ii) सरयूपार का मैदान:- "हिमालय पर्वत से पर्वत पदीय क्षेत्र में आते ही दो भागों में विभक्त होकर बहने वाली यह नदी गोण्डा के एलगिन पुल के समीप आकर पुनः एकधारा में मिलकर घाघरा की संज्ञा से अविहित है। सरयूपार क्षेत्र में बहराईच, श्रावस्ती, बलरामपुर से लेकर गोरखपुर के क्षेत्र शामिल है।''③

(iii) तराई क्षेत्र :- बहराईच से कुशीनगर जनपद व गोरखपुर का पूरा उत्तरी हिस्सा इस क्षेत्र में आता है। तराई क्षेत्र में "पहाड़ी से उतरने वाली नदियों एवं वेगवती धाराओं की गति कुछ मंद पड़ जाती है। पहाड़ से अपने साथ बहाकर लाए गए प्रस्तर खण्डों तथा विभिन्न रसायनों को वे छोड़ती जाती है।"④ इस क्षेत्र में दलदली जमीन भी पायी जाती है यहाँ की मिट्टी में नमी रहने के कारण जंगलों की अधिकता है।

(vi) दक्षिण का पठारी भू-भाग :- मध्य प्रदेश की सीमाओं से लगे जिलों में समतल और पठारी भू-भाग है। मिर्जापुर, इलाहाबाद, सोनभद्र जिले का एक विस्तृत क्षेत्र दक्कन पठार श्रृंखला के अन्तर्गत आता है। यहाँ पर विध्य पर्वत श्रेणियां मिलती है जिसमें आदिम सभ्यता

के जीवंत निशान जगह- जगह पर परिलक्षित होते हैं। इस क्षेत्र में पानी की कमी और भयंकर गर्मी से उष्म मौसम भयंकर कष्टकारी हो जाता है।

(ग) <u>मौसम और वातावरण</u>:- पूर्वी उत्तर प्रदेश में तीन प्रकार के मौसम होते है, गर्मी, बरसात और शीत। इसमें अक्टूबर से फरवरी तक शीतकाल, फरवरी से जून तक गर्मी और जुलाई से सितम्बर तक बरसात का मौसम रहता है| गर्मी के मौसम में जहाँ तराई क्षेत्रों में नमी बनी रहती हैं वहीं पठारी क्षेत्रों में नमीं बिल्कुल भी नहीं। "सोनभद्र, मिर्जापुर और इलाहाबाद में गर्मी में अधिकतम तापमान लगभग 47 से 48° से० तक पहुंच जाता है | जाड़े में सामान्यतः 8.5 से 17.5°C रहता है। पूर्वी भाग में वर्षा 100 से 200 सेमी० के बीच रहता है। मैदानी क्षेत्रों में गोरखपुर में सर्वाधिक वर्षा होती है जिसका औसत 184.7 सेमी० है।

(घ) <u>जल संसाधन व नदी</u>:- इस क्षेत्र में छोटी- बड़ी नदियो का जाल है। इसमें मुख्य रूप में नदियों की चार प्रवाह प्रणाली है। गंगा नदी, घाघरा, गंडक और सोन नदी | छोटी - छोटी जल परियोजना से जैसे तलाब, नदी, झील आदि। बलिया, वाराणसी, गोरखपुर में बड़े तालाब और झीलो की संख्या अधिक है। बाँध बनाकर पानी का भण्डारण भी कम है, नहरों की संख्या जरुरत से कम है। गर्मी के समय में छोटे तालाब और पोखरे सूख जाते हैं।

(ड०) <u>वनस्पति व मृदा विविधता</u> :- पूर्वी उ०प्र० का तराई क्षेत्र में जंगलों की आधिकता है। शाल, शीशम, सागौन, जामुन, आम, महुआ जैसे विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे यहाँ उगते हैं। इस प्राकृतिक अरण्य को हमारे शास्त्रों में 'महावन' के नाम से जाना जाता है। जंगलों की तेजी से कटाई के कारण उस पर आश्रित जनजातियाँ गम्भीर संकट में हैं

(च) <u>खनिज संसाधन और उद्यम</u> : “सोनभद्र जनपद में कजरहट से रोहतास क्षेत्रों में लोहे व चूने के पत्थर पाये जाते हैं। सोनभद्र व मिर्ज़ापुर में चूने के पत्थर, इलाहावाद के शंकरगढ़ व वारगढ़ क्षेत्रों में सिलिका बालू मिलता है”⑥ सन् 1995 तक देवरिया व जनपद गोरखपुर, महाराजगंज चीनी के उत्पादन में देश में अग्रणी था लेकिन सरकारी उदासीनता से इसमें तेजी से गिरावट हुई| मऊ, वाराणसी, गोरखपुर, बस्ती में देश में प्रचलित सूती वस्त्र उद्योग में अब भारी गिरावट हुई है। आजमगढ़ व मऊ में मिट्टी के के सजावटी वर्तनों का काम बड़ी कुशलता से हो रहा था। आधुनिक कृषि की आवश्यकता हेतु फर्टिलाइजर, उद्यम का काम भी ठप पड़ा हुआ है। गोरखपुर व वाराणसी में रेलवे लोको वर्कशाप से उद्यमिता में बढ़ावा मिला है।

पूर्वी उत्तर-प्रदेश की की उपर्युक्त भौगोलिक स्थिति उन वस्तुगत परिस्थितियों का निर्माण करती है, जिसके आन्तरिक में एक खास तरह का समाज व उसकी संस्कृति उभरकर आती है। मानव व प्रकृति के बीच इस द्वन्द्वात्मक रिश्ते से भौतिक व आत्मिक उत्पादन का सम्पूर्णता प्राप्त होती है। यह सम्पूर्णता मनुष्य के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में अभिव्यक्त होता है।

③<u>सामाजिक परिवेश</u> :- भारतीय गाँवों की सामाजिक संरचना व बनावट बाहर से जितनी सहज व सरल दिखती है उसकी आंतरिक बनावट उतनी ही जटिल है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री श्यामचरण दुबे के अनुसार "क्षेत्रीय तथा सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक एकक के रूप में गाँव एक स्वतन्त्र और स्पष्ट भिन्न इकाई है। लेकिन पह इकाई अपने समग्र रूप में जिस भारतीय समाज को बनाती है वह एक दूसरे पर निर्भर व गतिशीलता को बनाए रखती है। इस समग्रता की धुरी निश्चय ही ग्राम समाज है। इसलिए गाँधी जी ये कहा था कि "भारत की आत्मा गाँवों में बसती है।"⑦

इन गाँवों की सच्चाई किसी को भी उद्देलित व परेशान करने वाली है। ये गाँव सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक आदि सभी बिन्दुओं पर विभाजित व अल्प विकास समस्या से ग्रसित है। प्रसिद्ध समाजवादी लेखक शिवपूजन सहाय 1948 में राष्ट्र निर्माण व विकास में आने वाली बाधाओं व अपने सीधे अनुभवों से बेचैन होकर लिखा "में ठेठ देहात का रहने वाला हूँ, जहाँ नई रोशनी की सभ्यता का उजाला नहीं पहुंचा ऐसे अंधेरे में पड़े हुए गाँव से है, जहाँ न अच्छी सड़क हैं, न स्कूल है, न पुस्तकालय है। न अस्पताल है, न वहाँ कोई सरकारी अफसर आसानी से पहुंच पाता है और न कोई नेता"

आज भारतीय राष्ट्र निर्माण की धुरी अर्थात गाँव किसान समाज के जातीय विभाजन ने राष्ट्र निर्माण की आमूल प्रक्रिया को पूरी तरह बाधित किया। | आर्य समाज व महात्मा गांधी ने वर्ण व्यवस्था की की पुरजोर समर्थन कर जांति विभाजन की श्रृंखला को कम कर सामाजिक एकता व समरसता बनाने का प्रयास जरूर किया लेकिन यह प्रयास सार्थक नहीं हो सका। पूर्वी उ०प्र० के ग्रामीण समाज में आजादी के बाद भी दलित समाज की दुर्दशा होती रही |

"गावों में आज भी अछूतों को बड़ी दुर्दशा है | कितने ही गाँवों में बस्ती के बाहर अंत में एक किनारे छोटी जातियों के घर या झोपड़े मिल जाएगे, उनका कुआँ भी अलग रहता है। मन्दिर में प्रदेश आज भी वर्जित है। उनकी होली भी अलग रहती है। गाँव के साहूकार उन्हे कर्ज देते

हैं और सूद-दर सूद जोड़कर उनके मवेशी हाँक लाते हैं। खेत खलिहान पर दखल जमाकर उनसे हलवाहे, चरवाहे और मजदूर का काम लेते हैं।"⑨

पूर्वी उर-प्रदेश के गाँवों के सामाजिक परिवेश की मुख्य विशेषता जातीय विभाजन और उस विभाजन के आधार पर बसावट है। मुस्लिम दलित जातियाँ मुख्यतः छोटे उद्यमों से जुड़ी हुई हैं। पंचायत व मंदिरों पर मुख्य अधिकार बड़ी जातियों का ही है| 1490 के बाद निश्चित से इन परिस्थितियों में अन्तर आया है।

लेकिन टकराहटों और तनावों का जोर भी बढ़ा है। दलित व मध्यवर्ती बाहुल्य वाले इस पर क्षेत्र में गरीब, सीमान्त, व मजदूरों की संख्या काफी है। इसलिए इस क्षेत्र के लोगों का संक्रमण भी बेहद बड़ा है। इस संक्रमणे को गोरखपुर, वाराणसी, इलाहावाद जैसे रेलवे स्टेशनों से व बसों में देखा जा सकता है। पूर्वी उत्तर-प्रदेश के गाँवों का सामाजिक परिवेश अपनी परम्परा व रूढिगत विशेषताओं के साथ एक नए परिवर्तनों को अंगीकार किया, जिसके चलते तनाव विभाजन, गतिशीलता, परिवर्तन व नयी जमीन व एकता तथा नए निर्माण का परिदृश्य खड़ा हुआ है। संघर्षों के मुद्दे पर आम एकता की प्रक्रिया बड़ी है, संयुक्त परिवार बिखरने से नए मूल्यों की मांग बढ़ी है, लेकिन इससे निश्चय ही वुजुर्गों और असहाय लोगों की हालत दयनीय हुयी है।

सन् 1980 के बाद बैंकिक व खाद बीज और ट्रैक्टर की घुसपैठ से पूरी कृषि व्यवस्था में उलट-फेर हुआ है। सन् २००० के बाद विश्व बाजार की पैठ ने ग्रामीण व्यवस्था को काफी हद तक प्रभावित किया है। एक बार फिर सूद खोरी बैंकों के कर्ज से किसान, गरीब व आमजन की पीठ चरमरा रही है। रही-सही बाकी कसर बाजार ने अपने मूल्य से पूरा कर दिया है। औद्योगिक विकास न होने के कारण आज भी जमीन पर दबाव बना हुआ है। पूर्वी उत्तर-प्रदेश के गाँवों में विरह- बर्बादी व विडम्वना के गीत मौजूद हैं।

4-सांस्कृतिक परिवेश :- संस्कृति एक व्यापक शब्द है जिसके अन्तर्गत मनुष्य के समस्त व्यवहार सम्मिलित हैं। यह किसी भी समाज के मनुष्य की सामूहिक जीवन शैली है, इसे अलग- अलग तरह से व्याख्यायित किया गया है। "संस्कृति मनुष्प की सर्जनात्मक शक्तियाँ और योग्यताओं के साथ समाज के विकास का ऐतिहासिक निर्धारण स्तर है। यह स्तर लोगों के जीवन व कार्य कलाप का संगठित रूपों एवं प्रकारों में तथा लोगों द्वारा निर्मित भौतिक तथा आत्मिक में व्यक्त होता है। इस सामान्य परिभाषा के अलावा संस्कृति की संकल्पना का उपयोग ऐतिहासिक युगों की विशिष्टता को इंगित करने के लिए किन्ही ठोस समाजों

अथवा जातियों की लाक्षणिकता सूचित करने के लिए मानव गतिविधियों के क्षेत्रों को को अभिलक्षित करने के लिए तथा अंततः अधिक संकीर्ण अर्थ में लोगों के आत्मिक जीवन के प्रसंग में हो सकता है।"⑩

" संस्कृति का जन्म मनुष्य के अस्तित्व के कठोर संघर्ष की जरुरत से हुआ, इस प्रकार संस्कृति उसे भाषा देती है, जिससे वह दूसरों से जटिल संवाद स्थापित कर सके, कुछ सीख सके, सिखला सके। इस सबके पीछे होती है अवधाराणात्मक क्षमता। इस तरह संस्कृति मनुष्य की भौतिक व आत्मिक अवधाराणात्मक क्षमता है जो उसके प्रकृति व आपसी संवाद तथा संघर्ष से निर्मित होता है। अर्थात संस्कृति ही मनुष्य को परिवेश से अनुकूलन की क्षमता प्रदान करती है।" ⑪

इस प्रकार सांस्कृतिक परिवेश का आशय सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक परिवेश से संघर्ष व जूझने की समस्त भौतिक भौतिक व आत्मिक प्रयास है।

पूर्वी उत्तर-प्रदेश के गावों का सांस्कृतिक परिवेश इसके रूढिगत, परम्परागत जीवन यापन, मान्यता व त्योहारों के साथ साथ आधुनिक गीत संगीत, नाटक फिल्म व नए जनवादी मूल्यों के सम्मिलन से निर्मित होता है। गाँव में जाति प्रथा की सामाजिक, राजनीतिक उपस्थिति के साथ-साथ उसकी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ बनी हुई हैं| प्रमुख गीत / गायन शैली -

(क) फगुआ या फाग :- पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिवरात्रि के बाद हिन्दू समाज में होली का असर शुरु हो जाता है। होलिका दहन व होली के दिन तक चलने वाले होली के गीत की खनक से गाँवों में एक नयी रौनक पैदा हो जाती है। एक दूसरे के घर जाने, अबीर, गुलाल से खेलने, खाने पीने से सामाजिक समरसता का अद्‌वितीय रूप मिलता है।

(ख)निर्गुण:- पूर्वी उ०प्र० की सर्वाधिक लोक प्रचलित गीत शैली है। यह निर्गुण भक्ति परम्परा से जुड़ा हुआ है।

(ग) पूरबी:- यह विरह पर आधारित गीत है जो काफी लोकप्रिय है।

(घ) बिरहा:- यह एक मण्डली द्वारा गाया जाने वाला प्रचलित शैली है।. इसमें किसी सत्य घटना पर आधारित कथा पौराणिक आधार पर वीर, करुण, हास्य श्रंगार रस का प्रयोग किया जाता है।

(ड०) आल्हा:- पूर्वी उ०प्र० में नामपंचमी के अवसर पर नट जाति के द्वारा महोवा के दो वीर आल्हा उदल की स्मृति में गाया जाने बाला वीर रस का गीत शैली है।

(च) कजरी:- सावन के महीने में गाया जाने वाला यह मधुर लोकगीत झूला झूलते समय सामूहिक रूप से महिलाओं द्वारा गाया जाता है।

इसके अतिरिक्त पूर्वी उ०प्र० में रामचरित मानस के गायन की परम्परा भी तेजी से स्थापित व लोक प्रिय हुयी है। परम्परागत गीत शैली में चैता, सोहर विवाह गीत, रोपाई, कटाई, सोहनी के विभिन प्रकार की गीत शैली आज भी सांस्कृतिक परिवेश को बनायी हुई हैं।

प्रमुख त्योहार : (क) दीपावली :- लक्ष्मी व गणेश की पूजा के मिथक पर आधारित इस त्योहार पर दीप के जश्न में आधुनिक युग का समावेश द्रुत गति से हुआ है। यह पूर्वी उ०प्र० का ही नही सम्पूर्ण भारत का दीपों का त्योहार है।

(ख)दशहरा:- राम-रावण के युद्ध व रावण के विनाश मिथक पर आधारित यह त्योहार सप्ताह भर चलता रहता है बुराई पर अच्छाई के विजय का प्रतीक यह त्योहार सामूहिक सम्मिलन एवं सर्जना का त्योहार है।

(ग) मकर संक्रान्ति:- सूर्य के उत्तरायण व नदी स्नान से जुड़े इस त्योहार में लाखों श्रद्वालु नदी में स्नान करते हैं चूकि सबसे पवित्र नदी गंगा-यमुना है इसलिए लोग प्रयाग व वाराणसी में एकत्रित होते हैं। इसे खिलाड़ी का त्योहार भी माना जाता है जो गोरखपुर में काफी लोकप्रिय है।

(घ) शिवरात्रि: यह त्योहार लोक आस्था का अत्यन्त लोकप्रिय त्योहार है। इस पर्व पर गाँवों में मेले लगते हैं, शिवलिंग की पूजा होती है। सरस्वती पूजन, विश्वकर्मा पूजा, चित्रगुप्त पूजा, दुर्गा पूजा आदि का त्योहार धूमधाम से मनाया जाता है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में मुस्लिम समुदाय द्वारा परम्परागत रूप से मनाए जाने वाले प्रमुख त्योहार ईद, बकरीद व मुहर्रम है। इसमें सर्वाधिक लोक प्रिय मुहर्रम है जिसके ताजिए

में हिन्दू भी शामिल होते हैं। ताजिए का जुलूस निकलता है जहाँ ताजिया दफन होता है, वहाँ मेला लगता है। इस तरह दूर-दराज के लोगों का आपसी मिलन भी होता है।

उपर्युक्त गीत-नृत्य के अतिरिक्त आधुनिक त्योहार, रंगकर्म, नृत्य गीत का प्रचलन भी बढ़ा है। गाँवों में शादी, तिलक, मुण्डन, जन्मदिन, सालगिरह आदि के अवसर पर नौटंकी के नाच की जगह फिल्मी व आधुनिक गीतों वाले आरकेस्ट्रा का प्रचलन बढ़ा है। सरकारी स्कूलों, दफ्तरों में 15 अगस्त 26 जनवरी, 2 अक्टूबर का राष्ट्रीय पर्व मनाया जाता है।

<u>प्रमुख लघु उद्योग व चित्रकारी</u>:- (क) चित्रकला पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में चित्रांकन के लिए 'उकेरना' या 'उलाहना' शब्द प्रयोग होता है। चित्र बनाने के लिए चूना, सिंदूर, गेरु, गोंद आदि का प्रयोग होता है। बांस की कुंची हाथ व आधुनिक ब्रश के प्रयोग से रंगों का संयोजन स्थिर व चटख होता है। कोहबर, महावर, अल्पना, रंगोली आदि प्रमुख शैलियाँ हैं।

<u>(ख) काष्ठ व बाँस कला</u> :- पूर्वी उ०प्र० के गाँवों में मकानों के निर्माण में बहुत बदलाव आया है। परम्परागत मिट्टी, खपरैल व लकड़ी से बने मकानों का प्रयोग एकदम न के बराबर होकर सीमेन्ट, क्षण के पक्के मकान बनने लगे किन्तु उसमें अभी भी दरवाजे, खिड़की झरोखा के लिए प्रयुक्तुत लकड़ियों पर देवी-देवता, पशु पक्षी, फूल आदि का अंकन अद्भूत है। लकड़ी के काम कुर्सी, मेज, तखत, आदि व लोहे से सम्बन्धित काम परम्परागत जाति बढ़ई व लोहार द्वारा होता है। बाँसों का काम बसफोर जाति द्वारा, सूपा, खाँची उलिया, पंखा, झपोली, दोने, आदि का होता है।

<u>(ग) मिट्टी कला</u>: पूर्वी उ०प्र० में परम्परागत रूप से मिट्टी का काम करने वाले कुम्हार जाति से हैं। चिकनी, काली मिट्टी के प्रयोग व परम्परागत भट्ठी से बने मिट्टी के वर्तन आज भी शुभ व दैनिक प्रयोग में आते है|

<u>(घ) कालीन व साड़ी पर चित्रकारी:-</u> पूर्वी उ०प्र० का यह एक विशिष्ट कला एक उद्योग में बदल चुका है। ईरान की संस्कृति के प्रभाव आजमगढ़ व वाराणसी में उपजे ठेठ पूर्वी संस्कृति वाले कालीन व साड़ियाँ संभ्रात लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र है| यहाँ साड़ियों में शीशे, चाँदी, सोने का अद्भूत काम है।

<u>उपसंहार:-</u>

उपर्युक्त आधुनिक सांस्कृतिक हालातों शिक्षा व विवाह परम्पराओं में काफी बदलाव है। शैक्षिक स्थिति पूर्व अपेक्षा, बदलती है। निजी स्कूलों की संख्या में बेतहासा वृद्धि हुई है।

दलित व मध्यवर्ती जातियों खासकर महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरुकता आई है। तकनीकि का मेडिकल संस्थाओं के चलते विज्ञान का प्रभाव बढ़ा है, लेकिन आज भी पिछड़े लोगों में अंधविश्वाश कायम है | रहन-सहन, खान-पान व शिक्षा में काफी हद तक बदलाव हुआ है।

पूर्वी उ०प्र० की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक संरचना आधुनिकता की प्रक्रिया को एक जटिल किन्तु समृद्ध सन्दर्भ देती है। यह विशाल क्षेत्र न केवल परम्पराओं को संजोए हुए है वरन् आधुनिक मान्यताओं, विचारधाराओं को आत्मसात कर एक नये कलेवर, परिवर्तनशील समाज के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। भविष्य में जब तकनीकी, सामाजिक तथा सांस्कृतिक नवाचार अधिक प्रभावशाली होंगे तब पूर्वी उ०प्र० का यह द्वंद्व परम्परा और आधुनिकता के बीच संतुलन और बेहद स्पष्ट, प्रभावशाली रूप से देखने को मिलेगा|

संदर्भ / सहायक ग्रंथ सूची

1. सांख्यिकी पत्रिका- 1999, राज्य नियोजन विभाग, उ०प्र०, पृष्ठ-२२

2. उ०प्र० परिचय २००7 (विशेषांक) सं० भगवान स्वरुप कटियार- पृष्ठ सं०-05

3. वही- पृष्ठ सं०-04

4. वहीं पृष्ठ सं०-०4

5. वही- पृष्ठ सं०-05

6. खनिज एवं खनिज विभाग, वार्षिक सर्वेक्षण, उ०प्र०- 1998, पृष्ठ स०-49

7. भारतीय ग्राम - श्यामचरण दुबे, वाणी प्रकाशन 1996, पृष्ठ सं०-14

8. ग्राम सुधार- शिवपूजन सहाय, नवीन संस्करण 2007, पृष्ठ सं०-14

9. वहीं पृष्ठ सं0-85

10. मानव और संस्कृति, लेखक- यूलियान ब्रोमलेय, अनुवाद-योगेन्द्र नागपाल पृष्ठ सं०-22

11. संस्कृति व समाजवाद लेखक सच्चिदानंद सिन्हा - पृष्ठ सं०-18